नवरात्रि
17 अक्टूबर 2020 से 24 अक्टूबर तक

# नवरात्रि में करें विशेष पूजन

## पारदेश्वरी महादुर्गा, महाकाली व महालक्ष्मी

आदिशक्ति माँ दुर्गा का स्वरूप तीव्र और शांत दोनों प्रकार का है, जहाँ तामसी कार्यों अर्थात् शत्रु बाधा, भूत-प्रेत आदि दोष निवारण के लिए देवी का स्वरूप चंडिका, काली आदि की तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति एवं आर्थिक, व्यापारिक उन्नति हेतु माँ दुर्गा के शांत गौरी स्वरूप की साधना की जाती है, उसी प्रकार जीवन में शान्ति, मानसिक सुख, शुद्धता व्यापारिक, पारिवारिक उन्नति, कन्या विवाह, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु देवी के महाकाली स्वरूप की साधना की जाती है।

आद्या शक्ति माँ दुर्गा देवाधिदेव भगवान शंकर की शक्ति है। माँ दुर्गा काली साधना भगवान शिव की साधना के साथ सम्पन्न करनी चाहिये। भगवान शंकर का प्रिय धातु है पारद। इसीलिए पारद को ही भगवान शिव के स्वरूप माना गया है। साधना में शीघ्र सफलता के लिऐ हमारे ऋषि मनीषी पारद से निर्मित माँ महादुर्गा की प्रतिमा जिसे स्वर्णग्रास युक्त पारदेश्वरी महादुर्गा या पारदेश्वरी महाकाली कहते हैं कि स्थापना, पूजन, साधना कर माँ आदिशक्ति के साक्षात् दर्शन से सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं।

माँ पारदेश्वरी की प्रतिमा तो वर्ष में कभी भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को स्थापित की जा सकती है लेकिन विशेष रूप से चारों नवरात्रियों (चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, आषाढ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तथा माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा) को किसी भी दिन स्थापित करना भाग्योदयकारी माना गया है।

आदिशक्ति माँ की पूजा आराधना साधना का अलग-अलग विधान शास्त्रों में भरा पड़ा है, लेकिन समय साधन सुविधा को देखते हुए कुछ सुविधाजनक विधान बताये जा रहे हैं जो निम्नानुसार हैं-

### नवरात्रियों में विशेष पूजन

नवरात्रियों में किसी भी दिन प्रतिमा को स्थापित कर प्रातःकाल जल्दी से लगभग ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो लाल रंग के आसन पर बैठें और तन तथा मन से पवित्र होने के लिए पवित्रीकरण क्रिया करें।

पूजन तो सपरिवार करना चाहिये, विशेष रूप से गृहलक्ष्मी (पत्नी) के साथ। अपने दाहिने हाथ की ओर बिठाकर। सर्वप्रथम एक लकड़ी के तख्त या पट्टे पर लाल नया वस्त्र बिछा दें, उसके मध्य में चावल की ढेरी बनाकर कलश की स्थापना करें (जल भरकर हल्दी, सुपारी, सिक्का डाल दें और ऊपर से लाल वस्त्र लपेट कर नारियल रख दें) सामने नवग्रह के लिए पीले चावलों से छोटी-छोटी नव ढेरी उस पर एक-एक हल्दी सुपारी भी रख दें। अब अपने सामने किसी अच्छे सिंहासन या चौकी में लाल वस्त्र का आसन बिछाकर आदि शक्ति माँ पारदेश्वरी की प्रतिमा को स्थापित करें पास में ही वहीं पर दीपक भी जला दें। यदि संभव हो, सुविधा हो तो नवरात्रि भर अखंड दीप भी जलायें।

अब संकल्प लेने के लिए हाथ में अक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प मंत्र पढ़ें- यदि संस्कृत न पढ़ सकें तो अपनी भाषा (बोली) में-महिना, पक्ष, तिथि, दिन का नाम लेकर अपना गोत्र तथा नाम का उच्चारण कर अपनी जो भी मनोकामना हो उसे पूर्ण करने के लिए आदिशक्ति माँ की आराधना, पूजन साधना करूँगा। पूर्ण भावना श्रद्धा के साथ बोलकर अक्षत, पुष्प, जल किसी पात्र में रख दें।

वैसे तो प्रतिमा को उपरोक्त दिवसों में कभी भी स्थापना करके नित्य सामान्य रूप से पंचोपचार पूजन (पुष्प से जल छिड़क कर स्नान फिर सूखे मोटे कपड़े से अच्छी तरह साफ कर, कुंकुम चन्दन, पुष्प (जहाँ तक लाल पुष्प) नैवेद्य (भोग) धूप दीप आरती) करें।

पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का रूद्राक्ष माला से (रूद्राक्ष माला पूर्ण रूप से पूजित तथा संस्कारित हो) 1 माला, 11 माला या 21 माला अवश्य जप करें, उसके बाद अंत में निम्न प्रार्थना पूर्ण समर्पण की भावना से भक्तिभाव के साथ एकाग्र मन से सम्पन्न करें-प्रार्थना नित्य पाँच बार या सात बार अवश्य करें।

मंत्र- ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

### प्रार्थना

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।1।।
ब्रह्मरूपे सदानंदे परमानंद स्वरूपिणी।
द्रुतसिद्धि प्रदे देवी नारायणी नमोस्तुते।।2।।
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वास्यार्ति हरे देवी नारायणी नमोस्तुते।।3।।
दुर्गे स्मृता हरषि भीतिम् शेष जन्तोः।
स्वस्थै स्मृता मति मतीव शुभाम् ददासि।
दारिद्रय दुख भय हारिणी कात्व दन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता।।4।।
देहि मे सौभाग्यम् देहि में परमम् सुखम्।
रूपम् देहि जयम् देहि यशो देहि दिशो जही।।5।।
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गाक्षमा शिवा धात्री श्वाहा स्वधा नमस्तुते।।6।।
प्रसीदत्वम महेशानि प्रसीद जगदम्बिके।

अनंत कोटि ब्रह्माण्डे नायिके तै नमो नमः।।7।।

सर्व शक्ति महामाये नव दुर्गे जगन्मातरः।

दिव्यज्ञान स्वरूपिणी प्रथमासि मुहुर्मुहुः।।8।।

## पारदेश्वरी जगदम्बा पूजन प्रयोग

माँ दुर्गा के स्वरूप का ही प्रचण्ड स्वरूप है, सिंह पर सवार (काल के ऊपर) हाथ में खड़ग, दूसरे हाथ में अग्नि, ज्योति समस्त पाप राशि को भस्म कर पूर्ण चेतना के प्रवाह हेतु, तीसरे हाथ में त्रिशूल (शत्रु दमन एवं त्रिगुणों से ऊपर उठ मोक्ष प्राप्ति हेतु) ये ही सब वर निःसंदेह एवं सहज ही प्राप्त हो जाते हैं, पारदेश्वरी दुर्गा के इस विशिष्ट साधनात्मक प्रयोग द्वारा नवरात्रि में किसी भी दिवस रात्रि में अथवा दिन में अथवा किसी भी शुक्रवार की रात्रि में ही इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है। पारदेश्वरी दुर्गा एवं सौभाग्यदायिनी माला पहले से प्राप्त कर लें। रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुखकर लाल आसन पर बैठ जाएं, सामने चौकी पर भी लाल वस्त्र बिछा दें तथा पुष्पों का आसन बना एक स्टील अथवा चाँदी के पात्र में पारदेश्वरी दुर्गा को स्थापित करें। घी का दीपक जलाएं तथा गायत्री मंत्र की पाँच माला जप करें। ''तत्पश्चात् सौभाग्यदायिनी माला'' से निम्न मंत्र की 2 माला जप करें। अगर किसी विशेष विपत्ति या संकट के निवारण हेतु प्रयोग कर रहे हैं तो पहले संकल्प लें कि अमुक कार्य की सिद्धि हेतु आप प्रयोग कर रहे हैं।

मंत्र-।। ॐ ह्रीं दुर्गे पारदेश्वरी सर्वार्थ सिद्धिं क्लीं फट्।।

मंत्र जप के पश्चात् पारदेश्वरी दुर्गा को पूजा स्थान में स्थायी रूप से स्थापित कर दें। प्रतिदिन पूजन के दौरान 11 बार मंत्र का उच्चारण अवश्य करें। कभी किसी विशेष कार्य हेतु कहीं जाने से पहले कार्य सिद्धि हेतु 21 बार मंत्र जप कर फिर जाएं, तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

## हम पारद लक्ष्मी स्थापना से जीवन को ऐश्वर्यवान् बना सकते हैं

आदिकाल से लक्ष्मी मानव जाति ही नहीं देवताओं के लिए भी वरदान स्वरूप ही रही है। एक प्रकार से देखा जाए तो लक्ष्मी सम्पूर्ण जीवन के सौभाग्य का आधार है। सतयुग, त्रेतायुग या द्वापर युग, प्रत्येक युग में लक्ष्मी का महत्व लोगों ने स्वीकार किया है। समुद्र मंथन के समय जब लक्ष्मी प्रकट हुई तो विष्णु ने लक्ष्मी का ही वरण किया। महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र शंकराचार्य आदि जितने भी ऋषि हुए हैं, उन्होंने लक्ष्मी की साधना की, एक ही प्रकार से लक्ष्मी साधना नहीं की, अपितु लक्ष्मी के प्रत्येक स्वरूप को साधना के द्वारा प्राप्त किया, क्योंकि लक्ष्मी 108 प्रकार की होती है, जैसे धन लक्ष्मी, यशोलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, बल लक्ष्मी आदि इसलिए ये ऋषि अद्वितीय और मूर्धन्य बन पाए, इस लेख में चर्चा का मुख्य विषय धन लक्ष्मी है, क्योंकि आज के समाज के लिए यही मुख्य उपास्या लक्ष्मी हैं।

विश्वामित्र ने लक्ष्मी की आराधना करके उनसे विनय की, किन्तु लक्ष्मी ने उनकी प्रार्थना सुनने से इन्कार कर दिया, फिर उन्होंने स्वरचित मंत्रों द्वारा साधना सम्पन्न की। इसके फलस्वरूप लक्ष्मी को विवश होकर विश्वामित्र के सामने झुकना पड़ा और आजीवन विश्वामित्र के साथ चेरी बन कर रहना पड़ा। श्रीराम और कृष्ण ने भी लक्ष्मी की साधना के द्वारा अपने राज्य को समृद्धि युक्त बनाया।

धनवान बनना कोई बुरा नहीं है किन्तु धन को इज्जत, मान-मर्यादा शास्त्रीय नियमों के अनुकूल विचारों के द्वारा परिश्रम से प्राप्त करना चाहिए, कई बार अत्यधिक परिश्रम धरे रह जाते हैं, ऐसी स्थिति में ही पारद-लक्ष्मी की साधना करनी चाहिए। इसमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

'यजुर्वेद' में लक्ष्मी का आह्वान करते हुए स्पष्ट किया गया है कि यदि स्वर्णग्रास देकर पारद लक्ष्मी की प्रतिमा घर के अग्नि कोण में स्थापित करें और नित्य उनका पूजन करें तो उस घर में निरन्तर धन की वर्षा होती रहती है। यजुर्वेद में ''श्री'' और ''स्वर्णावती'' के रूप में आहवान करते हुए उसे ''पारदेश्वरी'' शब्द से सम्बोधित किया है। इसमें वर्णन मिलता है कि लक्ष्मी के श्रेष्ठ 108 रूपों में पारदेश्वरी लक्ष्मी की साधना अपने आप में, अद्वितीय सिद्धि प्रदायक, श्रेष्ठ और सम्पन्नता प्रदान करने वाली है।

''सामवेद'' की एक ऋचा में पारद लक्ष्मी की आराधना करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार कल्पवृक्ष समस्त इच्छाओं को पूरा करता है, आप भी उसी प्रकार हमारे जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति करें।

''धनंजय संचय'' में वर्णन है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में धन, ऐश्वर्य व सम्पन्नता प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि श्रेष्ठ गुरू के द्वारा अपने साधना कक्ष में पारद शिवलिंग ईशान कोण में तथा भगवती पारद लक्ष्मी की स्थापना अग्नि कोण में करनी चाहिए।

''पारदेश्वरी लक्ष्मी'' के पूजन से निम्न लाभ स्वतः प्राप्त होने लगते हैं-

1. आर्थिक बाधाएं दूर होती हैं और नवीन लाभ प्रारम्भ होते हैं।
2. नौकरी में आने वाली कठिनाइयां दूर होती हैं।
3. यदि पदोन्नति में बाधा हो तो वह दूर होती है।
4. यदि व्यापार में आय कर से सम्बन्धित कठिनाई हो तो वे कठिनाइयां दूर होती है।
5. जीवन के समस्त भोग प्राप्त होते हैं।
6. समाज में सम्मान व यश प्राप्त होता है।
7. पूर्ण पुरूषत्व प्राप्त होता हैं, यदि सन्तान से सहयोग न मिल रहा हो तो सहयोग प्राप्त होने लगता है।

ऊपर लिखे लाभों के अलावा अन्य ऐसे कई लाभ हैं जो पारद लक्ष्मी की साधना से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति अपने जीवन के सम्पूर्ण भोगों को भोगता हुआ इस साधना के द्वारा मोक्ष भी प्राप्त करता है। आवश्यकता इस बात की है कि पूर्ण विधि-विधान एवं इसके गुह्य रहस्यों को पूज्य गुरूदेव द्वारा प्राप्त करके ही साधना प्रारम्भ करें।

### साधना-स्थापना विधि-

पूर्ण शास्त्रोक्त विधि-विधान से प्राण-प्रतिष्ठित पारदेश्वरी लक्ष्मी का विग्रह प्राप्त कर लें।

- किसी भी कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी (वैसे धनतेरस कुबेर दिवस श्रेष्ठ है) को प्रातः काल पूजा स्थान को स्वच्छ कर लें तथा स्वयं भी स्नान कर सर्वथा नये वस्त्र जो गुलाबी या पीले रंग के हो, धारण कर लें।
- अपने सामने किसी बाजोट पर गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी से रंगे चावलों के द्वारा स्वास्तिक अंकित करें तथा उस स्वास्तिक पर एक ताम्र या रजत प्लेट रखकर ''श्री'' मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प रखें, उन पुष्पों पर पारदेश्वरी लक्ष्मी को स्थापित करें।
- स्थापना के पश्चात् पंचोपचार पूजन संपन्न करें।
- (स्नान, चंदन, कुंकुम, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप, आरती)
- पूजन की समाप्ति पर निम्न मंत्र का स्फटिक मणिमाला या कमलगट्टे की माला से 1 माला जाप करें और मंत्र जप करते समय अक्षत तथा पुष्प थोड़ा-थोड़ा समर्पित करते रहें।

मंत्र-

**ॐ ऊँ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं पारदेश्वरी ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं ऊँ ।।**

अथवा

मंत्र- ऊँ ऐं वरद पारदेश्वरी महालक्ष्म्यै नमः

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् गुलाब पुष्पों की माला विग्रह पर समर्पित करें और श्रद्धायुक्त नमन् करते हुए भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वे स्थायी रूप से हमारे घर में निवास करे तथा प्रत्येक दृष्टि से सम्पन्नता प्रदान करें। ♦♦♦


**अष्टलक्ष्मी कवच**

जब लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है तो वहाँ स्वतः ही अष्ट लक्ष्मी का विचार आता है अष्ट लक्ष्मी के पूजन, उपासना व धारण करने से आठ प्रकार के ऐश्वर्य के मार्ग खुलने लगते है, क्या आप भी भोगना चाहते है आठों ऐश्वर्य.....

न्यौछावर राशि 4000/- रु.